International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-10-2020; Accepted: 05-11-2020; Published: 21-11-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 56-61

झारखण्ड राज्य में नगरीकरण की प्रवृत्ति

मुकेश कुमार
Guest Faculty, S.G.G.S. College, Patna Saheb, Patliputra University, Patna, Bihar, India

निबन्ध–सार

प्रस्तुत शोध–पत्र द्वारा भारत के झारखण्ड राज्य में नगरीकरण की दशा एवं दिशा को प्रकाश में लाया गया है। 15 नवम्बर 2000 ई. को झारखण्ड राज्य भारत का 28वां राज्य बना है। इस राज्य में भारत वर्ष के औसत नगरीकरण से कम प्रतिशत में नगरीकरण हुआ है। 2011 के जनगणना के अनुसार इस राज्य में 24.05 प्रतिशत नगरीय आबादी है जबकि राष्ट्रीय स्तर पर नगरीय आबादी 31.14 प्रतिशत है, से काफी कम है। नगरीय आबादी कम होना इस क्षेत्र के पिछड़ेपन को दर्शाता है। 1901 ई. से 2011 ई. के जनगणनानुसार झारखण्ड राज्य की नगरीय आबादी एवं नगरों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। 1901 ई. में कुल 13 नगर थे और इन शहरों में कुल आबादी का मात्र 1.94 प्रतिशत लोग रहते थे जो 2011 ई. में बढ़कर 228 नगर और इन शहरों में कुल आबादी 24.05 प्रतिशत हो गई। 2001 ई. से 2011 ई. के बीच नगरों की संख्या में काफी वृद्धि हुई पर नगरीय आबादी वृद्धि की गति काफी कम रही। झारखण्ड राज्य बनने के बाद यहॉं की राज्य सरकार द्वारा विकास के कार्य किये जा रहे हैं और नगरीकरण पर जोर दिया जा रहा है। 2011 ई. के जनगणना के अनुसार इस राज्य में कुल 228 नगर है जिसमें 10 बड़े नगर हैं। इन 10 बड़े नगरों में कुल नगरीय आबादी का 54.6 प्रतिशत जनसंख्या रहती है। इन 10 बड़े नगरों में ज्यादातर नगर औद्योगिक नगर हैं एवं कुछ नगर धार्मिक पर्यटक नगर हैं। झारखण्ड राज्य खनिज सम्पदा एवं जंगल की प्रचुरता से भरा है।

मूलशब्दः नगरीकरण, जनसंख्या, झारखण्ड राज्य, नगर

प्रस्तावना

किसी भी देश, राज्य या क्षेत्र में नगरीकरण की प्रवृत्ति उस क्षेत्र के विकास को प्रदर्शित करता है। जिस क्षेत्र में औद्योगिकरण ज्यादा होती है, उस क्षेत्र में नगरीय जनसंख्या ज्यादा होती है अर्थात् नगरीकरण किसी क्षेत्र के विकास को प्रदर्शित करता है। नगरीकरण की प्रक्रिया लगातार चलने वाली क्रिया है। सामाजिक विकास, आर्थिक विकास, आधुनिकरण, औधोगिक विकास, राजनैतिक प्रभाव, प्राकृतिक कारण इत्यादि का प्रभाव नगरीकरण पर होता है। विर्थ महोदय ने नगरीयता को जीवन जीने की एक प्रणाली माना है। वर्गेल महोदय ने नगरीकरण को आधुनिक काल की सभ्यता की देन बताया है।

भारत के 28वें राज्य के रूप में 15 नवम्बर 2000 ई. को बिहार राज्य के छोटानागपुर एवं संथाल परगना क्षेत्र जो बिहार राज्य के दक्षिणी 18 जिलें थे, को अलग कर झारखण्ड राज्य बना। विभाजन पूर्व बिहार राज्य के कुल क्षेत्रफल का 45.8 प्रतिशत क्षेत्र झारखण्ड राज्य बना। यह राज्य बिहार राज्य के दक्षिण में स्थित है। इस राज्य के पूर्व में पश्चिम बंगाल, दक्षिण में उड़िसा, पश्चिम में छतीसगढ़, उत्तर में बिहार तथा उत्तर–पश्चिम में उत्तर प्रदेश अवस्थित है। झारखण्ड राज्य की राजधानी रॉंची है। यह राज्य 28,833 वर्ग मील अर्थात् 79,714 वर्ग किलों मीटर क्षेत्रफल में फैला है। झारखण्ड राज्य छोटानागपुर पठार में स्थित है। छोटानागपुर का पठार वास्तव में पठार, पहाड़ी एवं घाटी का समूह है जो आस–पास के राज्यों में फैला है। झारखण्ड राज्य के उत्तर–पूर्व में दामोदर नदी, दक्षिण पूर्व में सुवर्ण रेखा नदी, दक्षिण में ब्रह्माणी नदी बहती है तथा राज्य के उत्तर–पश्चिम सीमा पर सोन नदी है।

उदेश्य – प्रस्तुत शोध–पत्र के द्वारा झारखण्ड राज्य के जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीकरण की प्रवृत्ति को प्रकाश में लाना। झारखण्ड राज्य क्षेत्र में 1901 ई. से 2011 ई. के बीच नगरीकरण में क्या परिवर्त्तन आया है उसे प्रकाश में लाना है।

अध्ययन की विधियॉं – प्रस्तुत शोध हेतु मुख्यतः द्वितीयक ऑकड़ा का उपयोग किया गया है। आवश्यकतानुसार ऑकड़ों को स्वयं गणन कर तुलना किया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र – प्रस्तुत शोध–पत्र का अध्ययन क्षेत्र भारत का झारखण्ड राज्य है। जनसंख्या की दृष्टि से यह राज्य भारत का 14वां राज्य है और क्षेत्रफल की दृष्टि से 15वां राज्य है। यह राज्य 21°58′10′′से 25°19′15′′उत्तरी अक्षांश एवं 83°19′50′′से 87°57′ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है।

JHARKHAND
LOCATION MAP
N
AFGHANISTAN
PAKISTAN
CHINA
(TIBET)
New Delhi
NEPAL
BHUTAN
BANGLADESH
JHARKHAND
Ranchi
MYANMAR
BAY OF BENGAL
ARABIAN SEA
LEGEND
International Boundary
State Boundary
Country Capital
State Capital
Map not to Scale
Copyright © 2017 www.mapsofindia.com
SRI LANKA
INDIAN OCEAN

चित्र 1

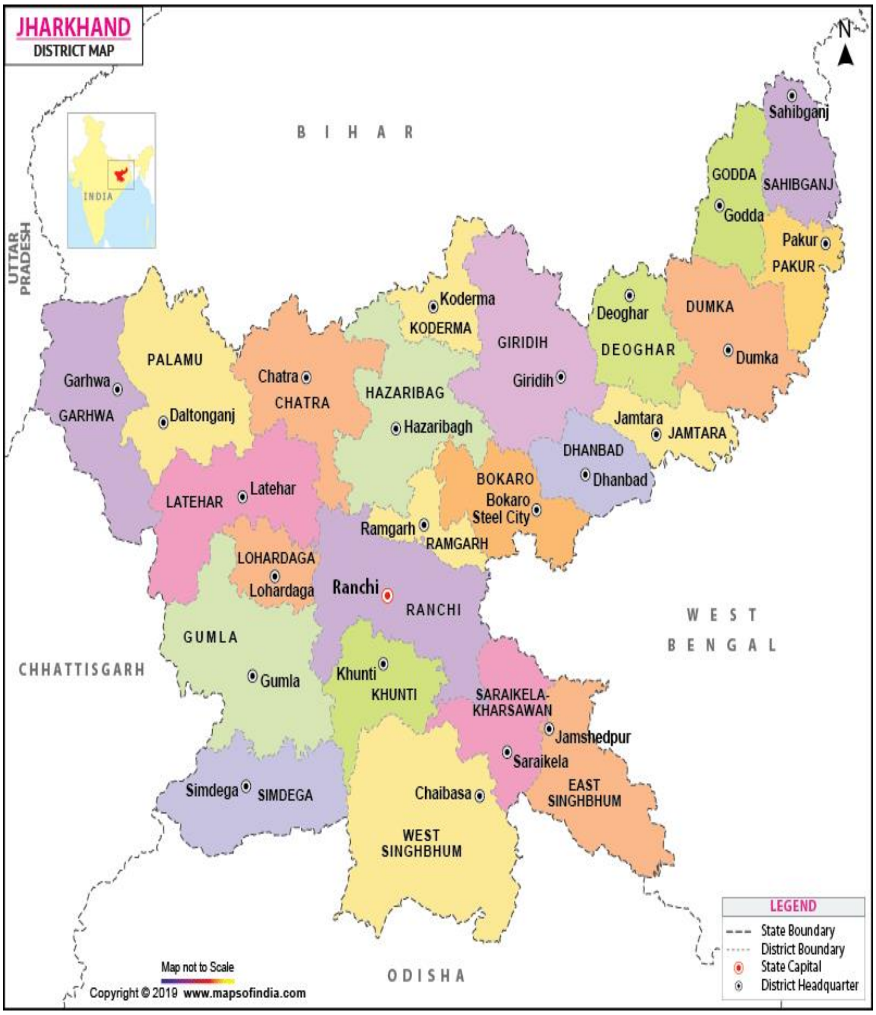
JHARKHAND
DISTRICT MAP
N
BIHAR
INDIA
UTTAR PRADESH
Sahibganj
GODDA
SAHIBGANJ
Godda
Pakur
PAKUR
Koderma
KODERMA
GIRIDIH
Deoghar
DUMKA
DEOGHAR
Dumka
Giridih
PALAMU
Garhwa
GARHWA
Daltonganj
Chatra
CHATRA
HAZARIBAG
Hazaribagh
Jamtara
JAMTARA
DHANBAD
Dhanbad
BOKARO
Bokaro Steel City
LATEHAR
Latehar
Ramgarh
RAMGARH
LOHARDAGA
Lohardaga
Ranchi
RANCHI
WEST BENGAL
GUMLA
CHHATTISGARH
Gumla
Khunti
KHUNTI
SARAIKELA-KHARSAWAN
Jamshedpur
Saraikela
EAST SINGHBHUM
Simdega
SIMDEGA
Chaibasa
WEST SINGHBHUM
LEGEND
State Boundary
District Boundary
State Capital
District Headquarter
Map not to Scale
Copyright © 2019 www.mapsofindia.com
ODISHA

चित्र 2

विवेचना

झारखण्ड राज्य 15 नवम्बर 2000 ई. को बना, इससे पूर्व यह बिहार राज्य का हिस्सा था। वर्त्तमान समय में झारखण्ड राज्य में 5 प्रमण्डल के अन्तर्गत 24 जिलें हैं। यह क्षेत्र जंगलों एवं खनीज सम्पदा से भरा होने के बावजूद पिछड़ा रहा। इस क्षेत्र में जनजातीय आबादी की प्रधानता है। भारत के कुल क्षेत्रफल का 2.42 प्रतिशत हिस्सा है जो कुल 79,714 वर्ग किलो मीटर है, इसमें से 77,922 वर्ग किलो मीटर ग्रामीण क्षेत्र है और शेष 1,792 वर्ग किलो मीटर शहरी क्षेत्र है। झारखण्ड राज्य जंगल एवं पहाडी से भरा होने के कारण यह क्षेत्र विकास से दूर रहा और इस क्षेत्र में नगरीकरण की प्रक्रिया सुस्त रही। झारखण्ड राज्य में कई औद्योगित ईकाई खुलने से उस औद्योगिक नगर एवं उसके आस–पास क्षेत्र में विकास हुआ। झारखण्ड क्षेत्र में पाषाण काल के अस्त्र–शस्त्र मिले हैं। पुराणों में छोटानागपुर क्षेत्र को मुरण्ड एवं मुंड कहा गया है।महाभारत में पुंडरीक देश कहा गया है। अशोक के शासनकाल में(273 ईसा पूर्व से 232 ईसा पूर्व) इस क्षेत्र को अटावी कहा जाता था, जिसका अर्थ जंगल राज्य है। झारखण्ड का पहला उल्लेख 12वीं शदी के नरसिंह देव (गंगराज के राजा) के शिला लेख में मिलता है। मुगलकाल में जहांगीर एवं औरंगजेब के कार्यकाल में उनके शासन क्षेत्र में आया। इस काल में इस क्षेत्र को कोकराह नाम से जाना जाता था। ब्रिटिशकाल में प्रारम्भिक समय में बंगाल रेजीडेंसी का हिस्सा रहा बाद में बिहार का हिस्सा हो गया। ब्रिटिशकाल में संथाल विद्रोह एक मुख्य क्रान्तिकारी घटना थी। इसी काल में रेलवे लाईन बिछाई गई एवं सड़क मार्ग का विकास हुआ। साथ ही कुछ नगरीय क्षेत्र विकसीत किये गये जैसे कि हजारीबाग एवं चतरा में सैनिक छावनी बनाया गया तथा हजारीबाग एवं रॉंची को क्रिश्चियन केन्द्र बनाया गया। 1901 ई. में नगरीय आबादी मात्र 1.94 प्रतिशत थी। 1951 ई. में इस क्षेत्र में नगरीय आबादी 7.84 प्रतिशत हुई जो बढकर 2011 ई. में 24.05 प्रतिशत हो गई। इसे निम्न तालिका द्वारा देखा जा सकता है।

तालिका 1: झारखण्ड राज्य की आबादी

जनगणना वर्ष	जनसंख्या	नगरीय आबादी	प्रतिशत नगरीय आबादी	नगरों की संख्या
1901	60,68,233	1,17,975	1.94	13
1911	67,47,122	1,58,827	2.35	16
1921	67,67,770	2,44,010	3.61	17
1931	79,08,737	3,22,475	4.08	18
1941	88,68,069	5,08,252	5.73	26
1951	96,97,254	7,60,350	7.84	35
1961	1,16,06,489	13,33,342	11.49	65
1971	1,42,27,133	27,77,632	16.01	96
1981	1,76,12,069	35,74,045	20.29	101
1991	2,18,43,911	46,41,227	21.25	133
2001	2,69,45,428	59,86,697	22.25	152
2011	3,29,88,134	79,33,061	24.05	228

स्त्रोत– जनगणना रिपोर्ट आधारित

तलिका सं.–1 से स्पष्ट है कि 1901 ई. में नगरीय आबादी बहुत कम थी, उस समय कुल आबादी 60,68,233 थी जिसमें मात्र 1,17,975 लोग ही नगरों में निवास कर रहे थे जो कि कुल झारखण्ड राज्य की आबादी का मात्र 1.94 प्रतिशत था। 1951 ई. के जनगणना वर्ष तक झारखण्ड क्षेत्र का नगरीय आबादी, कुल आबादी का 10 प्रतिशत से कम रहा है। 1961 ई. से नगरीय आबादी, कुल राज्य की आबादी का 10 प्रतिशत के अधिक हो गया। 2011 ई. में नगरीय आबादी 24.05 हो गया जो कि झारखण्ड राज्य के कुल आबादी का लगभग एक चौथाई है। तालिका से स्पष्ट है कि 1901 से 2011 ई. के प्रत्येक दशक में कुल नगरीय आबादी के साथ प्रतिशत नगरीय आबादी में भी लगातार वृद्धि हो रही है, कुल नगरों की संख्या में भी प्रत्येक दशक में वृद्धि हुई है।

जनगणना 2011 के अनुसार नगर श्रेणी को आबादी के अनुसार बॉटा है। नगर को कुल छः श्रेणी में रखा गया है। जिस नगर की आबादी 1,00,000 से ज्यादा है वे प्रथम श्रेणी के नगर हैं, जिस नगर की आबादी 50,000 से ज्यादा पर 1,00,000 से कम वे नगर द्वितीय श्रेणी के नगर में आते हैं, जिस नगर की आबादी 20,000 से ज्यादा पर 50,000 से कम वे नगर तृतीय श्रेणी के नगर है, जिस नगर की आबादी 10,000 से ज्यादा पर 20,000 से कम वे नगर चतुर्थ श्रेणी के नगर हैं, इसी प्रकार जिस नगर की आबादी 5,000 से ज्यादा पर 10,000 से कम वे नगर पंचम् श्रेणी के नगर हैं एवं जिस नगर की आबादी 5,000 से कम है वे षष्ठम् श्रेणी के नगर हैं। झारखण्ड राज्य में सन् 1901 ई. में कुल 13 नगर थे जिसमें एक भी नगर प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के नगर नहीं थे। रॉंची अकेला नगर था जिसकी आबादी 20,000 से ज्यादा थी और यह तृतीय श्रेणी का नगर था। नगरीय आबादी मात्र 1.94 प्रतिशत थी। 1911 ई. में कुल नगरों की संख्या बढ़कर 16 हो गई परन्तु प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी के नगर की संख्या में कोई परिवर्त्तन नहीं आया परन्तु नगरीय आबादी का हिस्सा बढ़कर 2.35 प्रतिशत हो गया। 1921 ई. में जमशेदपुर की आबादी बढ़ी और यह नगर पंचम श्रेणी के नगर से उठकर द्वितीय श्रेणी के नगर में आ गया जबकि रॉंची नगर तृतीय श्रेणी नगर में बना रहा। झारखण्ड राज्य का पहला द्वितीय श्रेणी नगर जमशेदपुर बना इसका मुख्य कारण यहॉं 1907 ई. में स्थापित की गई उद्योग का सफलतापूर्वक चलना रहा है। पिछले दशक की तुलना में कुल नगर की संख्या एक बढ़कर 17 हो गई और नगरीय आबादी 3.61 प्रतिशत हो गई। 1931 ई. में जमशेदपुर के साथ रॉंची नगर द्वितीय श्रेणी के नगर हो गये। तृतीय श्रेणी के नगर में वृद्धि हुई और दो नये नगर इस श्रेणी में आ गये। ये नगर गिरिडीह एवं हजारीबाग नगर हैं। नगरीय आबादी बढ़कर 4.08 प्रतिशत हो गया। 1941 ई. में झारखण्ड राज्य का पहला प्रथम श्रेणी नगर जमशेदपुर हुआ। द्वितीय श्रेणी के पूर्व के दो नगर में से एक नगर प्रथम श्रेणी के नगर हो गये इसकारण द्वितीय श्रेणी के नगर की संख्या दो से घटकर एक हो गई। तृतीय श्रेणी के नगर में गिरिडीह, हजारीबाग के साथ दो नये नगर धनबाद और साहेबगंज आ गये। राज्य की नगरीय आबादी में थोड़ी वृद्धि होकर 5.73 प्रतिशत हो गया। 1951 ई. में जमशेदपुर के साथ रॉंची नगर भी प्रथम श्रेणी के नगर हो गये। तृतीय श्रेणी में नये नगर देवघर नगर आ गये। राज्य के कुल आबादी का 7.84 प्रतिशत नगरीय आबादी हो गया। 1961 ई. में प्रथम श्रेणी के नगर की संख्या में कोई परिवर्त्त नहीं हुआ परन्तु

द्वितीय श्रेणी में धनबाद नगर आ गये। लेकिन तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम श्रेणी के नगर की संख्या में काफी वृद्वि हुई और कुल नगर की संख्या 35 से बढ़कर 65 हो गई। नगरीय आबादी का हिस्सा भी दहाई में 11.49 प्रतिशत हो गया। 1971 ई. में प्रथम श्रेणी के नगर वही रहे, द्वितीय श्रेणी में तीन नये नगर बोकारों स्टील सिटी, हजारीबाग एवं छाताताड़ नगर हुए। तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम श्रेणी के नगर की संख्या बढ़ी और कुल नगर की संख्या बढ़कर 96 हो गई। 1981 ई. में द्वितीय श्रेणी के दो नगर बोकारो स्टील सिटी एवं धनबाद प्रथम श्रेणी के नगर हो गये और कुल नगर की संख्या बढ़कर 101 हो गया। 1991 ई. में द्वितीय श्रेणी के नगर मैंगो प्रथम श्रेणी के नगर श्रेणी में आ गये और कुल 32 नये नगर शामिल हुए और कुल नगर की संख्या 133 हो गई। 2001 ई. में कुल नगर की संख्या 152 हो गई , प्रथम श्रेणी के नगर में आदित्यपुर एवं हजारीबाग शामिल हुये जिससे प्रथम श्रेणी के नगर की संख्या 5 से बढ़कर 7 हो गई। 2011 ई. में कुल 72 नये नगर शामिल हुए और कुल नगर बढ़कर 228 हो गई। प्रथम श्रेण के नगर में देवघर, चास एवं गिरिडीह शामिल हो गये और प्रथम श्रेणी के नगर बढ़कर 10 हो गये परन्तु द्वितीय श्रेणी के संख्या में कमी आई इसका मुख्य कारण कुछ शहरों का आपस में मिलन रहा है।

तालिका 2: श्रेणी अनुसार नगर की संख्या

जनगणना वर्ष	कुल नगर की संख्या	प्रथम श्रेणी नगर	द्वितीय श्रेणी नगर	तृतीय श्रेणी नगर	चतुर्थ श्रेणी नगर	पंचम श्रेणी नगर	षष्ठ श्रेणी नगर
1901	13	0	0	1	2	9	1
1911	16	0	0	1	4	10	1
1921	17	0	1	1	5	9	1
1931	18	0	2	2	7	6	1
1941	26	1	1	4	9	9	2
1951	35	2	0	6	10	10	7
1961	65	2	1	14	17	27	4
1971	96	2	4	23	26	33	8
1981	101	4	10	33	31	19	4
1991	133	5	17	29	38	38	6
2001	152	7	18	37	35	45	10
2011	228	10	12	39	48	90	29

स्त्रोत– स्वयं गणन जनगणना रिपोर्ट आधारित

2011 ई. के जनगणनानुसार झारखण्ड राज्य में कुल नगरीय आबादी का 54.56 प्रतिशत प्रथम श्रेणी के नगर में रहते हैं अर्थात् नगरीय आबादी का आधा से ज्यादा आबादी 10 बड़े नगर में रह रहे हैं और शेष 45.44 प्रतिशत नगरीय आबादी 218 नगरों में रह रहे हैं। तृतीय श्रेणी के नगर में कुल नगरीय आबादी का 16.2 प्रतिशत लोग रह रहे थे जबकि द्वितीय श्रेणी के नगर में 11.1 प्रतिशत लोग ही रह रहे हैं जो कि तृतीय श्रेणी के नगर से प्रतिशत आबादी से कम है। चतुर्थ एवं पंचम श्रेणी के नगर में क्रमशः 8.5 एवं 8.0 प्रतिशत जनसंख्या रह रही है। वही षष्ठम् श्रेणी के नगर में मात्र 1.7 प्रतिशत नगरीय आबादी रहती है। इसे निम्न तालिका एवं वृत्त से देखा जा सकता है।

तालिका 3: नगर श्रेणी अनुसार आबादी

नगर श्रेणी	नगरीय आबादी (2011 ई.)	प्रतिशत नगरीय आबादी (2011 ई.)
प्रथम श्रेणी	43,28,014	54.6
द्वितीय श्रेणी	8,82,716	11.1
तृतीय श्रेणी	12,82,052	16.2
चतुर्थ श्रेणी	6,74,280	8.5
पंचम श्रेणी	6,34,552	8.0
षष्ठम् श्रेणी	1,31,447	1.7
कुल	79,33,061	100

स्त्रोत– स्वयं गणन जनगणना रिपोर्ट आधारित

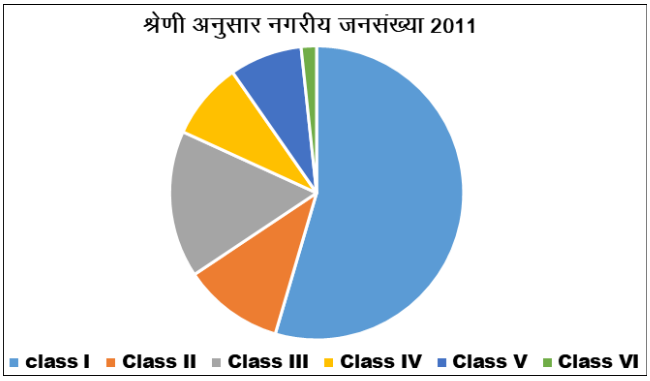

चित्र 3

झारखण्ड राज्य बनने के बाद राज्य सरकार द्वारा 18 जिलों को बढ़ाकर 24 जिला किया गया है। जिससे नये जिला के मुख्यालय नगर में विकास होगा। झारखण्ड राज्य के जिला में सबसे ज्यादा नगरीय आबादी वाला जिला धनबाद जिला है। यहाँ जिला के कुल आबादी का 58.13 प्रतिशत आबादी शहरी है। इसी प्रकार पूर्वी सिंहभूमि जिला में 55.56 प्रतिशत, बोकारों जिला में 47.70 प्रतिशत, रामगढ़ जिला में 44.13 प्रतिशत एवं रॉची जिला में 43. 14 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या है। अन्य जिलों में नगरीय आबादी 25 प्रतिशत से कम है।

तालिका 4: जिलावार नगरीय आबादी

क्रम सं.	जिला	नगरीय आबादी प्रतिशत में (2011 ई.)	राज्य की नगरीय आबादी का हिस्सा प्रतिशत में (2011 ई.)
1	धनबाद	58.13	19.67
2	पूर्वी सिंहभूमि	55.56	16.07
3	बोकारों	47.70	12.4
4	रामगढ़	44.13	5.28
5	रॉची	43.14	15.85
6	सरायकेला खारसावार	24.29	3.26
7	कोडरमा	19.72	1.78
8	देवघर	17.32	3.26

9	हजारीबाग	15.87	3.47
10	पश्चिम सिंहभूमि	14.51	2.75
11	साहेबगंज	13.88	2.01
12	लोहरदग्गा	12.43	0.72
13	पलामू	11.65	2.85
14	जामताड़ा	9.58	0.95
15	गिरिडीह	8.51	2.62
16	खूंटी	8.46	0.57
17	पाकुड़	7.50	0.85
18	सिमडेगा	7.16	0.54
19	लातेहार	7.13	0.65
20	दुमका	6.82	1.14
21	गुमला	6.35	0.82
22	चतरा	6.04	0.79
23	गढ़वा	5.27	0.88
24	गोड्डा	4.90	0.81

स्त्रोत– स्वयं गणन जनगणना रिपोर्ट आधारित

तलिका सं.–4 से स्पष्ट है कि पॉच जिलों की नगरीय आबादी अपने जिला के आबादी का 40 प्रतिशत से अधिक है जो राष्ट्रीय नगरीकरण की दर से ज्यादा है। एक जिला में अपनी आबादी का लगभग 25 प्रतिशत हिस्सा नगरीय जनसंख्या है। सात जिला में नगरीय आबादी 10 से 20 प्रतिशत के बीच है। शेष जिला में नगरीय आबादी 10 प्रतिशत से कम है। गोड्डा सबसे कम नगरीय आबादी वाला जिला है। झारखण्ड राज्य के कुल नगरीय आबादी का 64 प्रतिशत हिस्सा धनबाद, पूर्वी सिंहभूम, रॉची एवं बोकारों जिला में निवास करती है। इन जिलों में कम से कम एक–एक औद्योगिक नगर अवश्य हैं। शेष 36 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या अन्य 20 जिलों में है।

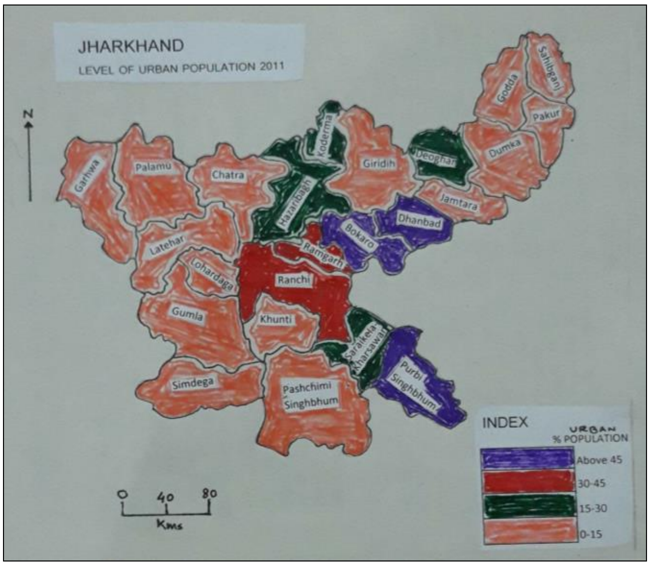

चित्र 4

1971 ई. में नगर समूह (Urban Agglomeration) की चर्चा जनगणना रिपोर्ट में आई है इसके अनुसार नगर का आकार बढ़कर निकट के नगर से जा मिलती है और नगर की सीमा भेद समाप्त हो जाती हैं। जनगणना 2001 में बताया गया है कि 20,000 से ज्यादा आबादी वाले नगर में ही नगर समूह (Urban Agglomeration) हो सकता है। 2001 ई. में झारखण्ड में कुल 11 नगर समूह (Urban Agglomeration) वाले नगर हैं। जिसमें 10 नगर समूह (Urban Agglomeration) वाले नगर प्रथम श्रेणी में आते हैं। वही एक नगर समूह (Urban Agglomeration) नगर द्वितीय श्रेणी के नगर है। 2011 ई. में देवघर नगर निगम मे जसीडीह शामिल होने से प्रथम श्रेणी के एक नगर, नगर समूह (Urban Agglomeration) से हट गये। इसी प्रकार धनबाद नगर निगम में 27 नगर शामिल किये गये जिससे धनबाद नगर की आबादी 1,99,258 से बढ़कर 11,62,472 हो गई।

निष्कर्ष

झारखण्ड राज्य जो 14 नवम्बर 2000 ई. तक बिहार का हिस्सा था। यह भाग वन सम्पदा एवं खनिज सम्पदा से भरा है परन्तु पहाड़ी–पठारी एवं जंगल से भरा होने से आबादी कम थी। नगरीय आबादी भी काफी कम था। इस क्षेत्र के जिस–जिस नगर में उद्योग लगे उस नगर की आबादी बढ़ी शेष हिस्सा में नगरीकरण मन्द रही। रॉची औद्योगिक नगर के साथ राज्य की राजधानी है इस कारण यह नगर में तीव्र गति से नगरीय विकास हुआ। जमशेदपुर, बोकारो, धनबाद नगर उद्योग के कारण विकसीत हुए। देवघर नगर धार्मिक स्थल होने के कारण विकास कर रहा है साथ ही राज्य सरकार इस नगर को सांस्कृतिक राजधानी के रूप में विकसीत कर रही है। झारखण्ड अलग राज्य बनने के बाद नगरों की संख्या में काफी बढ़ी। राज्य सरकार द्वारा नगरीकरण पर जोर दिया जा रहा है, भविष्य में नगर की संख्या के साथ ही साथ नगरीय आबादी का प्रतिशत भी बढ़ेगा।

संदर्भित ग्रन्थ

1. नगरीय भूगोल –डॉ. मुरली मनोहर प्रसाद सिन्हा एवं डॉ. सीमा बाला, राजेश पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
2. नगरीय भूगोल –डॉ. सुरेश चन्द्र बंसल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ
3. नगरीय भूगोल –डॉ. बी.पी.राव एवं डॉ. नन्देश्वर शर्मा, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर
4. झारखण्ड– एक अध्ययन, प्रतियोगिता साहित्य, आगरा
5. झारखण्ड का भूगोल –राजकुमार तिवारी, राजेश पब्लिकेशन, नई दिल्ली
6. छोटानागपुर का भूगोल –विमला चरण शर्मा, राजेश पब्लिकेशन, नई दिल्ली
7. संदर्भि वर्ष का जनगणना रिपोर्ट